Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

15

हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना
('मुक्तिपर्व' और 'तुम्हे बदलना ही होगा' के संदर्भ में)

डॉ. नारायण बागुल
हिंदी विभागाध्यक्ष
वसंतराव नाईक महाविद्यालय मुरुड जंजीरा जि. रायगड

प्रस्तावना

आधुनिक काल में साहित्य का विविध मुखी विकास हुआ है। समाज के सभी वर्गों का चित्रण साहित्य में होने लगा है। दलित साहित्य का निर्माण इसी बात का प्रमाण है कि जिस साहित्य में शोषित, उपेक्षित जन जीवन का चित्रण हो वही साहित्य दलित साहित्य है। सामाजिक परिवर्तन के लिए दलितों में अस्मिता का एहसास दिलाने के लिए दलित साहित्य की आवश्यकता पर बल दिया गया है और यह कार्य साहित्य के माध्यम से हो रहा है। अर्थात आज का साहित्य दलितों की व्यथा-कथा की करुण कहानी ही है। दलित साहित्य मुख्य रूप से दलितों के सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, बौद्धिक उथल-पुथल और अनुभूतियां में से गुजरता हुआ विकास की दिशा में अग्रसर हो रहा है। इसमें समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व का भाव है जो वर्ण व्यवस्था से उपजे जाति-पातिभेद विरोधी है। मोहनदास नैमिषशराय ने दलित साहित्य को 'बहुजन समाज के सभी मानवीय अधिकारों एवं मूल्यों के उद्देश्य से लिखा गया साहित्य' माना है। अतः स्पष्ट है कि दलित जीवन में चेतना जगाने का महत्वपूर्ण कार्य दलित साहित्य ने अपनी सशक्त लेखनी के द्वारा किया है। दलित साहित्यकारों में मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, सोनपाल सुमनाक्षर, कॅवल भारती, जय प्रकाश कर्दम, सुशीला टाकभौरे , पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी आदि का दलितों के जीवन में चेतना जगाने का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी के परिणामस्वरूप दलितों में परिवर्तन दिख रहा है। दलित साहित्य एक ऐसा साहित्य है जो सभी तरह की जाती-पाति, वर्ण- व्यवस्था, ऊंच-नीच आदि के भेदभाव के दायरे से ऊपर और जिसे धर्म जाति आदि की सीमा में बांधा नहीं जा सकता। दलित साहित्य दलितों की वेदना, अन्याय, अत्याचार, अपमान की पीड़ा की प्रस्तुति है। 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना तथा मानवता का प्रचार-प्रसार करने वाला यह साहित्य दलित जीवन की दारुण यातनाओं का खुला चित्रण करता है।

हिंदी उपन्यासकारों ने अपनी औपन्यासिक रचनाओं में दलित चेतना को वाणी प्रदान की। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर ने 'शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो' यह नारा देकर समाज परिवर्तन के लिए दलितों को संगठित किया। आज दलित साहित्यकार तथा उनका साहित्य मानव समाज को भेदभाव रहित जीने के लिए एक सामाजिक क्रांति की कामना करते हुए सामाजिक नवनिर्माण का क्रांति का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास करता है। दलितों का विद्रोह स्वर उपन्यासों के रूप में साहित्य के क्षेत्र में दिखाई दे रहा है। हिंदी उपन्यासकारों मोहनदास नैमिशराय, सुशीला टाकभौरे, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, सूरजपाल चौहान, श्योराज सिंह 'बेचैन' आदि ने अपनी रचनाओं में यही विद्रोह स्वर चित्रित किया है जो इन साहित्यकारों की प्रेरणा तथा चेतना बनकर उभर कर सामने आया है। इनके उपन्यासों में ग्रामों की बदलती हुई स्थितियां, उभरते नये मूल्य बोधों, बनते बिगड़ते नए संबंध, नयी मानसिकता की आवश्यकता है। दलितों तथा पिछड़े वर्गों में जो नया विचार सामने आया है उसी को उपन्यासकार ने चेतना के रूप में प्रस्तुत किया है। इन उपन्यासकारों के अनुसार यह चेतना जनहित, राष्ट्रीयहित, देशहित के लिए कल्याणकारी है तथा इसमें समाज का हित समाहित है। इस दृष्टि से सामानता, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक परिवर्तन एवं समाज में उपेक्षितों के उध्दार के लिए दलितों में चेतना का निर्माण होना आवश्यक है। यह सच है कि जब तक दलित समाज शिक्षित नहीं था तब तक उनका शोषण, अन्याय हो रहा था परंतु आज शिक्षा के प्रसार प्रचार के कारण दलित वर्ग शिक्षित हो रहा है परिणामत: अपने अधिकारों के प्रति दलित वर्ग सचेत होकर उसम चेतना उत्पन्न हो रही है। दलितों में उत्पन्न चेतना, नई विचारधारा नयी समाज व्यवस्था का प्रमाण ही है अर्थात सामाजिक परिवर्तन का यही प्रतीक है।

मोहन नैमिशराय राय दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं, जिन्हें दलित साहित्य ने एक पहचान दी है। उन्होंने बहुजन समाज का संगठन एवं जागृति करने के लिए विशेष योगदान दिया है। दलितों और पिछड़ों के अज्ञान को मिटाने के लिए, उन्हें ज्ञान के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करने के लिए मोहनदास नैमिशराय हरदम प्रयास करते रहे हैं तथा समाज में सामाजिक परिवर्तन के लिए नैमिशराय ने साहित्य का रास्ता अपना लिया। विशेष रूप से उन्होंने दलित समाज के दुख दर्द, अत्याचार, अन्याय आदि को उजागर किया है। नैमिशराय का समग्र साहित्य समता, स्वतंत्रता, भाईचारा तथा न्याय का वाहक है जिसमें गुलामी की जंजीरों से दलित समाज की मुक्ति का संघर्ष है। 'मुक्तिपर्व', 'सूअरदान', 'आज बाजार बंद है', 'क्या मुझे खरीदोगे', 'वीरांगना झलकारीबाई' आदि नैमिशराय के उल्लेखनीय उपन्यास है। मोहनदास नैमिशराय द्वारा 2002 में प्रकाशित 'मुक्तिपर्व' एक महत्वपूर्ण दलित उपन्यास है जो दलित समाज की चेतना, उनके शोषण और शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्रता की खोज पर आधारित है। यह उपन्यास दलितों के संघर्ष, समानता और सवर्ण समाज द्वारा किए जा रहे अन्याय और अत्याचारों के विद्रोह को दर्शाता है तथा उपन्यास में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक विषमता का शिकार दलित समाज दिखाई देता है। उपन्यास का नायक सुनीत अन्याय, अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करते हुए शिक्षा के प्रति दलित समाज में चेतना जगाता है। उपन्यास की कथा दलित बस्ती जिसे

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 5.16/ March - April 2026 / VOL-02 ISSUE-V

नरकीय जीवन जीने को मजबूर किया गया था, सुनीत वहां के बच्चों को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाता है और इसके लिए वह सवर्ण अध्यापक शिवानंद शर्मा के अन्याय, अत्याचारों का सामना करता है।

'मुक्तिपर्व' उपन्यास सामाजिक यथार्थ और दलित जीवन की कई पीढ़ियों से चली आ रही पीड़ा, दुख दर्द को उजागर करता है। उपन्यास में जहां समाज का एक हिस्सा सारी सुख सुविधाओं एवं भरपूर आनंद से रहित है वहीं दूसरी ओर दुख, गरीबी, दरिद्रता, मजबूरी और लाचारी में डूबा हुआ दलित समाज दिखाई देता है। उपन्यास में दो वर्गों पर प्रकाश डाला है जिसमें एक वर्ग सुख सुविधाओं से भरपूर जमींदार धनी संपन्न समाज है तो दूसरा वर्ग चमार, भंगी, डोम आदि दलितों का है। सामाजिक विषमता को उजागर करते हुए मोहनदास नैमिशराय ने दो अलग-अलग संस्कृतियों का पर्दाफाश किया है। ये दोनों वर्गों के अपने अपने संस्कार तथा अपनी अपनी संस्कृति है, पर जब वे दोनों एक दूसरे से टकराते हैं तब भरसक मारकाट होती है, सवर्ण वर्ग दलितों पर लाठियां चलाते हुए गाली-गलौज करता है। ऐसी स्थिति में सुनीत के मन में कई प्रश्न उठते हैं, जो उसमें जिज्ञासा और विद्रोह की स्वर को जन्म देते हैं। सुनीत को चमार होने की वजह से अपमान, अवहेलना और नफरत का शि होना पड़ता है परंतु वह हार नहीं मानता बल्कि अन्य अत्याचारी व्यवस्था के विरुद्ध आक्रोश व्यक्त करता है। दरअसल सवर्ण बिल्कुल नहीं चाहते कि कोई दलित का लडका पढ़ लिख जाए और उनके बराबरी का स्थान पाए। यहां उपन्यासकार सवर्णों की मानसिकता पर हमला करते हुए समझाते हैं कि सवर्ण दलितों को गुलामी से बाहर आने देना नही चाहते। सवर्ण समाज अपना अधिपत्य बरकरार रखना चाहता है। वस्तुत 'मुक्ति पर्व' उपन्यास में उपन्यासकार में दलित पीड़ित समाज की पीड़ा का हृदय स्पर्शी चित्रण किया है जिसमें सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक विषमता का वास्तव अंकन करके वर्तमान संदर्भ की समस्याओं को उभारा है। साथ ही उपन्यासकार ने वर्तमान समाज में निहित जातिवादी व सामंतवादी संस्कृति का पर्दाफाश करते हुए यह भी संकेत किया है कि किस प्रकार स्वाधीन भारत में सवर्णों द्वारा दलितों के साथ उपेक्षा, अवहेलना और अपमानजनक व्यवहार हो रहा है।

सुशीला टाकभौरे हिंदी उपन्यासों में दलित विमर्श की एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं, जिनके उपन्यास 'तुम्हें बदलना ही होगा ', 'नीला आकाश', 'वह लडकी' आदि दलित चेतना पर केंद्रित है। 'तुम्हें बदलना ही होगा'(1996) यह उपन्यास दलित जीवन की वर्ण-जातिभेद की समस्याओं को वर्तमान सन्दर्भों में गहराई से रेखांकित करते हुए शैक्षिक संस्थानों में दलितों के साथ होनेवाले अत्याचार, भेदभाव और संघर्षों का पर्दाफाश करता है। इसमें उपन्यासकार ने शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त जातिवाद को उजागर किया है। उपन्यास में धीरज कुमार और महिमा भारती इन दो चरित्रों के माध्यम से दलितों पर हो रहे अत्याचार और उनके विरोध को दर्शाया गया है उपन्यास की प्रमुख पात्र महिमा भारती है जो अपने चाचा चाची के साथ रहकर, तकलीफ़ झेलते हुए अपनी शिक्षा पूरी करती हैं। समाज में उसे जाति-पाति भेदभाव का सामना करना पड़ता है फिर भी वह समाज में दलितों की स्थिति में परिवर्तन लाने की कोशिश करती है। यहां महिमा शिक्षित है और अध्यापक के पद पर कार्यरत है जो उसे कई दिक्कतों का सामना करने की बावजूद मिला है परंतु दलित जाति की होने के कारण महिमा को हर जगह अवहेलना तथा अपमान सहना पड़ता है। महिमा का दृढ़ विश्वास है कि शिक्षा प्राप्त करके ही दलितों में चेतना का निर्माण किया जा सकता है तथा रुढ़ि परंपराओं से मुक्ति पाई जा सकती हैं। 'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास के प्रारंभ में ही उपन्यासकार ने दलितों की बदलती स्थिति का चित्रण किया है। वर्णभेद सामाजिक असंतुलन और जातिभेद का विरोध करने के लिए दलित लोग सड़कों पर उतर रहे हैं। अन्याय, अत्याचार के प्रतिरोध के स्वर समग्र उपन्यास में स्थान स्थान पर दृष्टिगोचर होते है। इसीलिए तो महिमा भारती लड़कर महाविद्यालय प्रशासन को अपना फैसला बदलने पर मजबूर करती है।

'तुम्हें बदलना ही होगा' उपन्यास दलित जीवन की वास्तववादी समस्याओं को रेखांकित करते हुए सवर्ण समाज की सामंतवादी सोच और रुढ़ि परंपराओं को त्यागकर सामाजिक समानता और दलितों को आत्मसम्मान के साथ जीने की आवश्यकता पर बल देता है। यह उपन्यास सवर्णों को अपनी मानसिकता में परिवर्तन लाने और दलितों को अपने अधिकारों के लिए सचेत होने का आवाहन करता है। लेखिका के अनुसार यह उपन्यास न केवल दलित चेतना बल्कि दलितों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव लाने वाली एक महत्वपूर्ण रचना है। अपनी औपन्यासिक रचना के माध्यम से लेखिका ने जातिगत भेदभाव का चित्रण, सामाजिक परिवर्तन की पुकार, नारी संघर्ष और सशक्तिकरण, अंतरजातीय विवाह आदि पहलुओं पर प्रकाश डाला है। महत्वपूर्ण बात यह है कि लेखिका की नजर केवल सामाजिक भेदभाव पर ही अटकी नहीं रह जाती बल्कि वह कथा को उससे भी आगे ले जाना चाहती है। उनकी मान्यता है कि आज सवर्ण और दलितों में वैवाहिक संबंध भी स्थापित होने चाहिए जिससे सामाजिक दरार कम हो जायेगी और वर्ण-व्यवस्था में परिवर्तन लाया जा सकता है। नि: संदेह हिंदी उपन्यास संसार में 'तुम्हें बदलना ही होगा' रचना दलित चेतना के एक नये वास्तव के लिए पहचानी जायेगी।

निष्कर्षत: कहां जा सकता है कि हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना का वास्तव चित्रण किया गया है और इस बात की पुष्टि की गई है कि जब तक दलित शिक्षित नहीं होगा तब तक उनका शोषण होता रहेगा। आज स्वाधीन भारत में शिक्षा का प्रसार अनिवार्य और मुक्त शिक्षा आदि के कारण दलित समाज शिक्षित हो रहा है उनमें संविधान द्वारा दिए गये आधिकारों प्रति जागरूकता का आ गई है। हिंदी उपन्यासों में परिवर्तित दलित जीवन तथा उनके जीवन में उत्पन्न होने वाली नई समस्याएं, सामाजिक व्यवस्था में उनका होने वाला प्रभाव आदि का यथार्थ चित्रण उपन्यासों में दृष्टव्य है जिसके परिणाम स्वरूप दलितों में आज नई विचारधारा पनप रही है और भविष्य में भी दलित साहित्य की संभावनाएं और दिशा अत्यंत व्यापक और आशाजनक दिखाई देती है।

©Copyright 2025 ADRJ. All Rights Reserved

संदर्भ –

1 मुक्ति पर्व उपन्यास, मोहनदास नैमिशराय, अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली
2 तुम्हें बदलना ही होगा उपन्यास, सुशीला टाकभौरे, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली
3 हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन, डॉ शंभूनाथ द्विवेदी, पूजा पब्लिकेशन, कानपुर
4 हिंदी साहित्य में दलित चेतना, डॉ जालिंदर इंगले, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर
5 हिंदी उपन्यासों में दलित वर्ग, कुसुम मेघवाल, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली